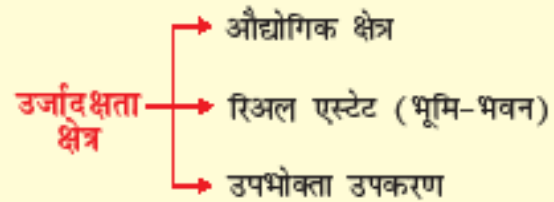


सतत विकास के लिए अहम है ऊर्जा दक्षता

संदर्भ

- ❖ भारत में व्यापक स्तर पर घरों का विद्युतीकरण हुआ है और जाहिर तौर पर ऊर्जा के लिए मांग में भी बढ़ोतरी हुई है। इसका एक प्रमुख कारण तेजी से बढ़ रही आबादी है। एक और वजह ऊर्जा संबंधी आर्थिक गतिविधियों में बढ़ोतरी है। चूंकि ऊर्जा के परंपरागत साधन कम हो रहे हैं और अक्षय ऊर्जा के साधन विकासशील दौर में हैं, लिहाजा सभी स्तरों पर ऊर्जा दक्षता में सुधार करना इस समस्या से निपटने का तात्कालिक समाधान है।
- ❖ **नोट:-** यह बात ध्यान देने योग्य है कि ऊर्जा, पर्यावरण और सतत विकास के बीच सीधा संबंध है।
- ❖ सतत विकास चाहने वाले देश को आदर्श और जरूरी तौर पर ऊर्जा के उन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए, जिसका पर्यावरण पर कम से कम बुरा असर होता है।
- ❖ ऊर्जा दक्षता में बढ़ोतरी के जरिये पर्यावरण संबंधी उत्सर्जन और उसके बुरे असर के मामले में सतत विकास की सीमा संबंधी चिंताओं से निपटा जा सकता है।
- ❖ सरकार ने राष्ट्रीय निर्धारित योगदान के जरिये उत्सर्जन तीव्रता को कम कर साल 2030 तक इसे 2005 के स्तर की तुलना में जीडीपी का 33-35 फीसदी तक कम करने का लक्ष्य तय किया है।

- ❖ इस लक्ष्य को हासिल करने के मकसद से खास तौर पर 3 क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए समेकित प्रयास करने की जरूरत है।



- ❖ औद्योगिक क्षेत्र अब भी सबसे ज्यादा ऊर्जा खपत करने वाला क्षेत्र है, जहां ऊर्जा संरक्षण की अहम भूमिका होगी।
- ❖ प्रमुख उद्योगों में किफायती स्तर पर ऊर्जा की खपत यानि ऊर्जा संरक्षण और तकनीकी बेहतरी के लिए काफी संभावनाएं हैं।
- ❖ ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) ऊर्जा दक्षता में सुधार के मकसद से राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता बढ़ोतरी मिशन (एनएमईईई) के तहत पीएटी-परफॉर्म, एचवी एंड ट्रेड यानि (प्रदर्शन करें, हासिल करें और व्यापार करें) योजना लागू कर रहा है।

परफॉर्म अचीव ट्रेड- (पीएटी) (Perform Achieve Trade- PAT)

यह ऊर्जा केंद्रित उद्योगों में खास तरीके से ऊर्जा खपत कम करने का नियामकीय औजार है।

इसके तहत संबंधित बाजार आधारित तंत्र के जरिये सरप्लास ऊर्जा की बचत के सर्टिफिकेशन के जरिये इसकी लागत को कम किया जा सकता है और बची हुई ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है।

पीएटी चक्र-1 में 478 डीसी थे, जो कुल 8 क्षेत्रों से जुड़े थे, जिनमें एल्युमीनियम सीमेंट, क्लोर-क्षार, ऊर्वरक, आयरन एवं स्टील, पेपर, ताप विद्युत संयंत्र, कपड़ा शामिल है।

इन क्षेत्रों को विशेष ऊर्जा खपत (SEC) यानि प्रति इकाई उत्पादन में इस्तेमाल की जाने वाली ऊर्जा को कम करने का लक्ष्य दिया गया था।

पीएटी का उद्देश्य

पीएटी चक्र 1 के तब उपभोक्ताओं डेजिगनेटेड कम्प्यूमर्स (डीसी) की ऊर्जा बचत को आवाज प्रदान के योग्य ऊर्जा बचत प्रमाण पत्र में बदल दिया गया है।

तकरीबन 38.25 लाख ऐसे ऊर्जा प्रमाण पत्र 306 तब उपभोक्ताओं को जारी किए गए हैं, जबकि 110 निर्धारित उपभोक्ताओं को इसके पालन के लिए 14.25 लाख ऐसे प्रमाण पत्र खरीदने पड़े।

वर्ष 2018 तक कुल 12.98 लाख प्रमाण पत्रों की ट्रेडिंग हुई और इससे कुल 100 करोड़ का कारोबार हुआ।

पीएटी के 'वूसरे चक्र' के लिए मार्च 2016 में अधिसूचना जारी की गई, जिसमें 11 क्षेत्रों के 621 डीसी को शामिल किया गया।

इनमें ऊपर बताए गए 8 क्षेत्रों के अलावा तीन नए क्षेत्र भी थे- रेलवे, रिफाइनरी और डिस्कॉम। वूसरे चक्र के पैट का मकसद कुल 8,869 MTO ऊर्जा खपत का लक्ष्य हासिल करना है।

भवन आवरण का प्रभाव क्षेत्र

छत, नीवारों और कांच की खिड़कियों के जरिये ऊष्मा चालन

भारत में सालाना ऊर्जा की कुल खपत में रियल एस्टेट क्षेत्र की 30 फीसदी से भी ज्यादा की हिस्सेदारी है और औद्योगिक क्षेत्र के बाद यह मीन हाउसिंग सेक्टर के उत्कर्ष का दूसरा सबसे बड़ा जरिया है।

कांच की खिड़कियों के जरिये विकिरण लाभ

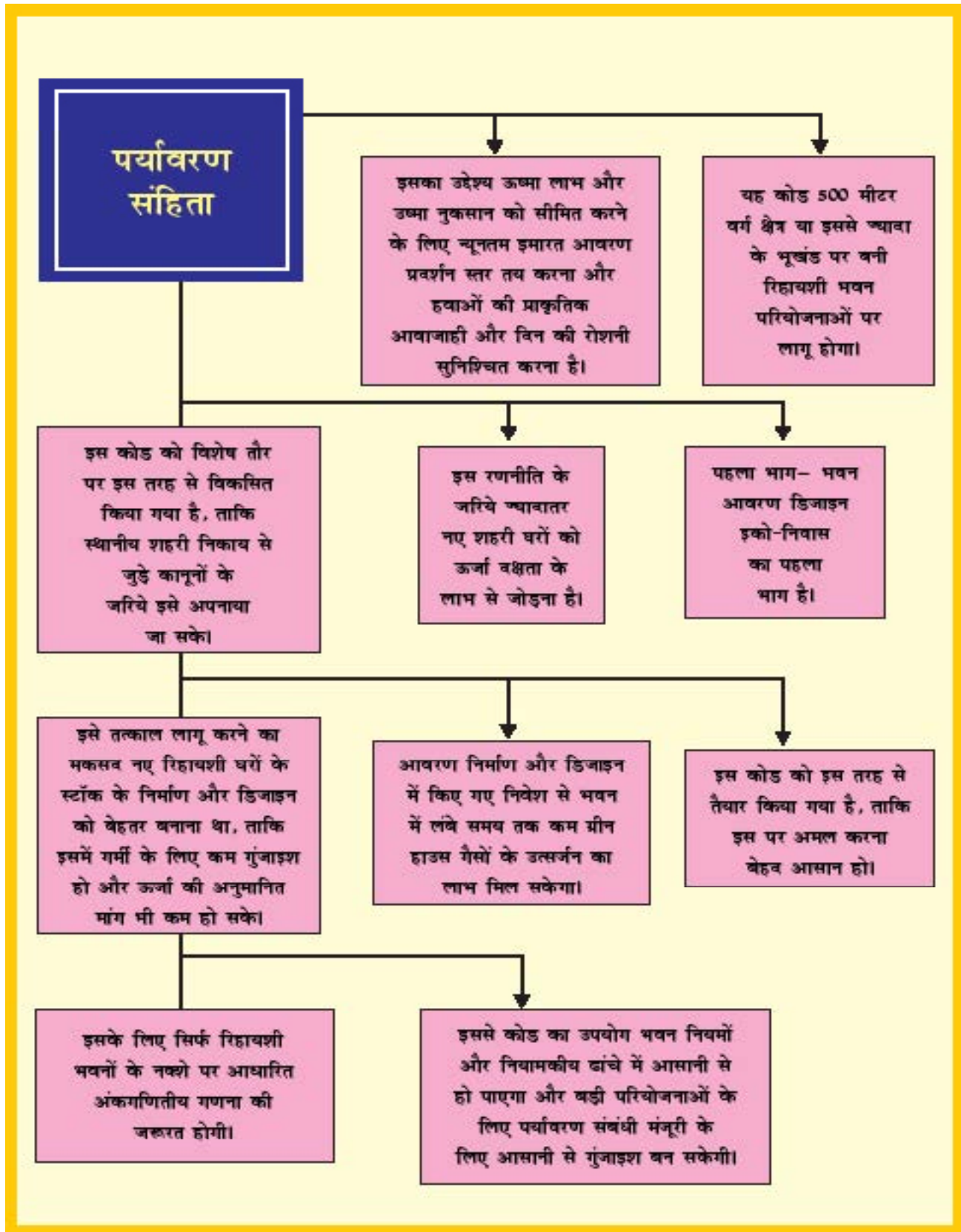
रियल एस्टेट क्षेत्र में तकरीबन 75 फीसदी ऊर्जा रिहायशी घरों में इस्तेमाल की जाती है।

प्राकृतिक वायु संचार

अतः बनाने वाले आवरण का असर ताप सुविधाओं के अलावा जगह के लिए इस्तेमाल की गई बिजली पर भी होगा।

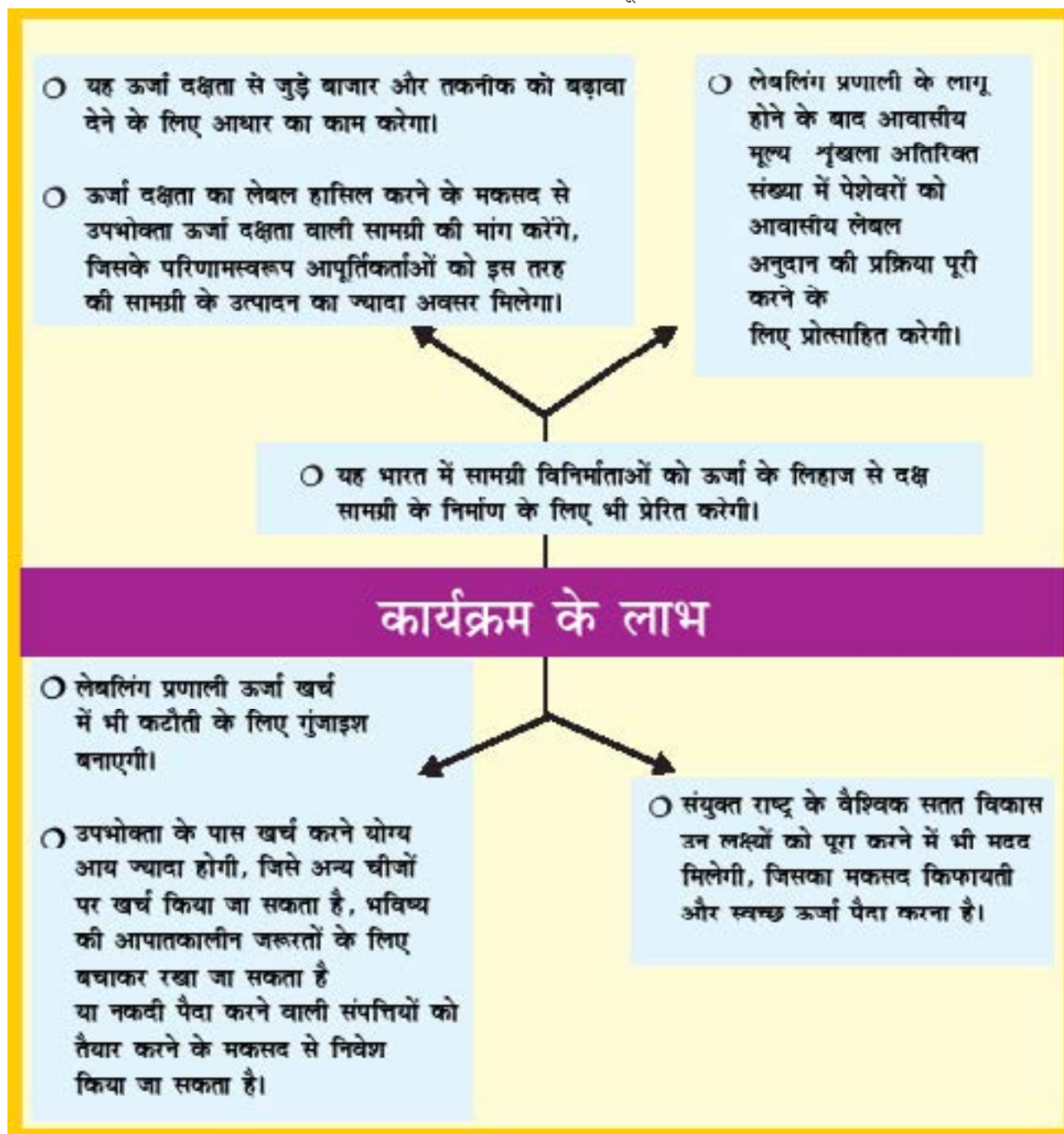
प्राकृतिक वायु संचार

इस मिलभिले में (BEE) के पास दो कार्यक्रम हैं-
□ पर्यावरण संहिता, रिहायशी इमारतों के लिए ऊर्जा संरक्षण इमारत कोड
□ ऊर्जा दक्षता वाले घरों के लिए लेबलिंग।



ऊर्जा दक्षता वाले घरों के लिए लेबलिंग कार्यक्रम

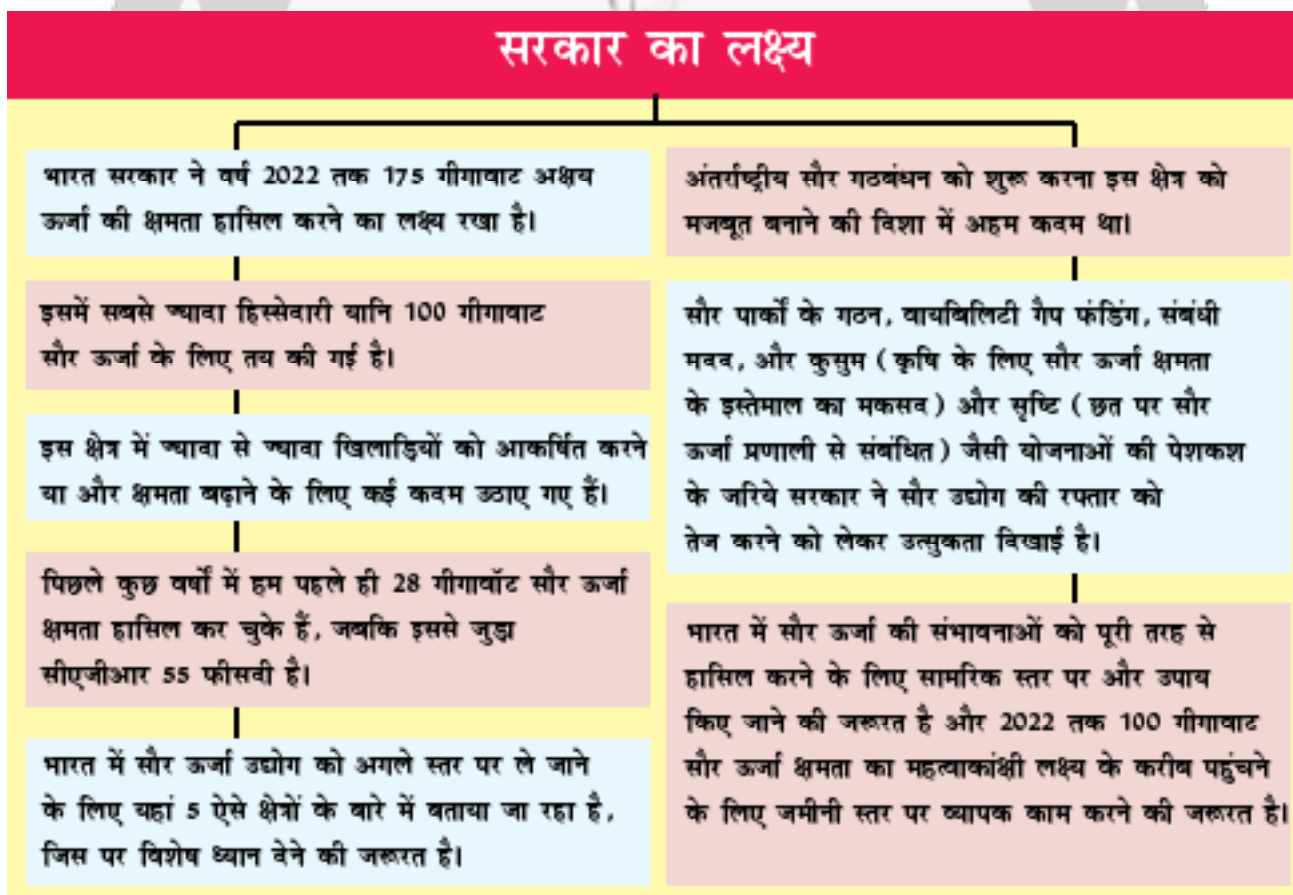
- ❖ उपभोक्ताओं को अक्षय ऊर्जा के नजरिये से भवनों की तुलना करने में सक्षम बनाने के लिए व्यापक लेबलिंग कार्यक्रम महत्वपूर्ण है।
- ❖ ऊर्जा लेबल उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष, भरोसेमंद और सस्ती जानकारी वाले प्रावधान के माध्यम से बेहतर फैसले लेने में मदद करते हैं। प्रस्तावित लेबलिंग कार्यक्रम का मकसद में बताया गया है।
- ❖ इससे पूरे देश में ऊर्जा दक्षता की स्थिति को बेहतर कर बड़े पैमाने पर ऊर्जा की बचत होने का अनुमान है।
- ❖ प्रस्तावित लेबलिंग कार्यक्रम के जरिये साल 2030 तक तकरीबन 388 बीयू ऊर्जा की बचत की संभावना है।



उपभोक्ता उपकरण

- ❖ उपभोक्ता उपकरण ऊर्जा की खपत से जुड़ा अहम क्षेत्र है। इसके दायरे में एसी, माइक्रोवेव, वॉशिंग मशीन आदि जैसे घरेलू इलेक्ट्रॉनिक उपकरण शामिल हैं।
- ❖ टिकाऊ उपभोक्ता सामग्री क्षेत्र में ऊर्जा की बचत संबंधी तकनीक को बढ़ावा देने के लिए कई तरह के कदम उठाए जा रहे हैं।
- ❖ ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) एयर कंडीशनरों के लिए अधिकतम तापमान सेटिंग के जरिये ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा दे रहा है।
- ❖ बीईई के अध्ययन के मुताबिक, एसी तापमान सेटिंग में एक डिग्री की बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप बिजली की खपत में 6 फीसदी की कमी आती है।
- ❖ ऊर्जा की बचत और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए 24-26 डिग्री सेल्सियस की डिफॉल्ट सेटिंग की सिफारिश की गई है।
- ❖ माइक्रोवेव ओवन घरों में काफी लोकप्रिय होता जा रहा है और इसमें ऊर्जा दक्षता और बेहतर तकनीक को बढ़ावा देने के लिए उपाय किए जा रहे हैं।
- ❖ स्टार रेटिंग वाले माइक्रोवेव ओवन और वॉशिंग मशीन को अपनाकर साल 2030 तक 3 अरब यूनिट से भी ज्यादा बिजली की बचत करने का अनुमान है।
- ❖ इस तरह से इन उपायों के जरिये साल 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में 24 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड की कमी हो सकती है।

सौर संभावनाओं को हासिल करने के उपाय



समसामयिक संदर्भ

- ❖ भारत की विशाल आबादी की जरूरतें भी तेजी से बढ़ रही हैं। हालांकि, संसाधनों का जस का तप बने रहना तेज रफ्तार वाली अर्थव्यवस्था की बढ़ रही मांगों को पूरा करने के लिए शायद पर्याप्त नहीं हो। उदाहरण के लिए हम ऊर्जा क्षेत्र की बात करते हैं।
- ❖ देश में बिजली की प्रति व्यक्ति की खपत 1,100 किलोवाट सालाना है, जो अमेरिका और चीन जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले काफी कम है।
- ❖ शहरीकरण और औद्योगिकरण विकास की बढ़ती दरों के साथ बिजली की मांग में भी तेजी निश्चित है।
- ❖ ऊर्जा के क्षेत्र में क्षमता को बढ़ाकर मांग-आपूर्ति के इस अंतर को दूर करना नीति निर्माताओं के लिए प्राथमिकता सूची में ऊपर है।

तकनीक

- ❖ भारत में सौर ऊर्जा देश की ऊर्जा जरूरतों का प्रमुख क्षेत्र बनकर उभर रहा है, लेकिन अभी भी इस सिलसिले में बड़ी खाई को पाटा जाना बाकी है।
- ❖ उदाहरण के तौर पर छत पर मौजूद रहने वाली सौर ऊर्जा वाली प्रणाली में बड़े स्तर पर क्षमता बढ़ाई जा सकती है, लेकिन इसके लिए संबंधित राज्य सरकारों से सहयोग जरूरी है।
- ❖ इस क्षेत्र में नई-नई तकनीक, मसलन फ्लोटिंग सोलर और बीआईपीवी (भवन की छतों और आवरण के लिए इस्तेमाल की गई पारंपरिक सामग्री के बदले फोटोवोल्टाइक सिस्टम का विकल्प) सौर ऊर्जा संबंधी क्षमताओं को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।
- ❖ इस क्षेत्र में बड़ी संभावना को देखते हुए सरकार और निजी इकाइयां, दोनों को शोध और विकास पर जोर देकर इसके लिए जरूरी मदद मुहैया कराना चाहिए और इस क्षेत्र से जुड़ी नई तकनीक और नवाचार को तेजी से अपनाना चाहिए।
- ❖ इससे न सिर्फ इसके लिए भविष्य की दिशा तय करने में मदद मिलेगी, बल्कि इसकी लागत को भी कम करना मुमकिन हो सकेगा। जाहिर तौर पर ऊर्जा के इस माध्यम को अपनाने की प्रक्रिया तेज होगी।

नीतिगत समर्थन

- ❖ तकनीकी विकास और सरकार की नीति के कारण पिछले कुछ साल में सौर ऊर्जा की दरों में कमी आई है और इस तरह से ऊर्जा के इस माध्यम की पहुंच आम लोगों तक बढ़ी है।
- ❖ हालांकि, हाल के वर्षों में सौर ऊर्जा संबंधी दरों का मार्जिन कम हुआ है, जिससे मुनाफा भी कम हुआ है।
- ❖ इसकी दरें ऊर्जा के अन्य साधनों के मुकाबले बेहद कम हैं और इसे देखते हुए बेहतर दरों की दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है, ताकि इस क्षेत्र के नए, खिलाड़ियों के लिए टिकाऊ कारोबारी मॉडल बन सके और इसमें पूंजी निवेश बढ़ने की राह आसान हो सके।
- ❖ इससे आखिरकार आपूर्ति में बढ़ोतरी होगी और आम आदमी के लिए कीमतें भी कम होगी।
- ❖ संबंधित राज्य सरकारों को क्षमता में नियमित बढ़ोतरी के साथ सौर ऊर्जा उत्पादन की दर के बारे में बताना चाहिए।

डिस्कॉम (वितरण कंपनियों) की आर्थिक हालत

- ❖ विद्युत वितरण कंपनियों की स्थिति सुधारने के लिए सरकार की पहल के बावजूद पिछले कुछ वर्षों में राज्य विद्युत वितरण कंपनियों की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है।
- ❖ ये वितरण कंपनियां ऊर्जा उत्पादन के चक्र में अहम कड़ी हैं और पूरी प्रक्रिया में इनका असर है।
- ❖ अतः वितरण कंपनियों को ठीक स्थिति में रखना साल 2022 से जुड़े लक्ष्य की अहम कड़ी है।
- ❖ सरकार को अक्षय ऊर्जा तकनीक का कुल मूल्य वसूलने के मकसद से सहायक बाजारों के संचालन की खातिर नीतियां भी बनानी चाहिए।

वित्तीय सुधार

- ❖ अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को मदद करने में बैंकिंग प्रणाली में सुधार दीर्घकालिक कदम होगा।
- ❖ फिलहाल, बैंकों ने विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर जो श्रेणी बना रखी है, उसके तहत बैंक अक्षय ऊर्जा को ऊर्जा क्षेत्र के एक छोटे से हिस्से के तौर पर देखते हैं और ज्यादातर बैंकों में कर्ज का अधिकांश हिस्सा ताप संयंत्रों के पास चला जाता है।
- ❖ इस तरह से फंड का महज छोटा सा हिस्सा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र के लिए बचता है। हालांकि, वास्तविकता यह है कि अक्षय ऊर्जा ने जबरदस्त बढ़ोतरी हासिल की है और सरकारी खजाने में राजस्व लाने में उसका शानदार योगदान रहा है।

- ❖ सरकार अक्षय ऊर्जा के रणनीतिक महत्व को देखते हुए इसे कर्ज के मामले में प्राथमिकता वाले क्षेत्र का दर्जा भी दे सकती है।
- ❖ भविष्य में अलग-अलग तरह के बॉन्ड मार्केट स्वच्छ ऊर्जा संबंधी परियोजनाओं के लिए किफायती दर पर फंड उपलब्ध कराने में मददगार होंगे।
- ❖ सरकार को बैंकिंग प्रणाली को साफ-सुथरा बनाने का अपना मिशन जारी रखना चाहिए और उसे बैंड लोन की समस्या को भी हल करने में बैंकों की मदद करनी चाहिए।
- ❖ साथ ही, बैंकों के कर्ज देने संबंधी नियम की भी समीक्षा होनी चाहिए, ताकि इसे कम सख्त बनाया जा सके।
- ❖ एक मजबूत बैंकिंग प्रणाली अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सस्ती दरों पर ज्यादा फंड मुहैया करा सकेगी।

करोबार में सुगमता (ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस) के लिए गुंजाइश बनाना

- ❖ सुधारों के लिए सरकार के अभियान ने भारत में निवेश के लिए अनुकूल माहौल तैयार किया है।
- ❖ पिछले कुछ साल में ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस रैंक में हमारी लगातार बेहतर होती स्थिति से भी यह पता चलती है।
- ❖ बहरहाल, पूरे वैल्यू चेन (मूल्य श्रृंखला) में परियोजनाओं पर काम करने के लिए जल्द से जल्द मंजूरी (खासतौर पर जमीन संबंधी बदलाव की मंजूरी) अक्षय ऊर्जा क्षेत्र के लिए काफी मददगार होगी।
- ❖ सरकार को ज्यादा मजबूत ट्रांसमिशन प्रणाली बनानी चाहिए। यह न सिर्फ निवेशकों के भरोसे को बढ़ाएगा, बल्कि विद्युत वितरण के दौरान नुकसान भी रोकेगा।
- ❖ साल 2022 तक 100 गीगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए केंद्र और राज्य सरकार के वित्त प्रदाताओं, डिस्कॉम और निजी खिलाड़ियों समेत तमाम संबंधित पक्षों से समन्वित प्रयासों की जरूरत होगी।
- ❖ सौर ऊर्जा उद्योग के विकास में बुनियादी बदलाव में सरकार को अहम भूमिका निभानी होगी।

सरकार को न सिर्फ जरूरी नीतिगत मदद मुहैया कराकर बल्कि विभिन्न संबंधित पक्षों का मुख्य समन्वयक बनकर भी इस भूमिका का निर्वहन करना होगा।

ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस रैंकिंग क्या होती है?

- ❖ उद्योग सहजता सूचकांक विश्व बैंक द्वारा जारी की जाने वाली सूचकांक है।
- ❖ ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस का अर्थ है कि देश में कारोबार करने में कारोबारियों को कितनी आसानी होती है।

- ❖ यदि कोई कंपनी भारत में कोई कारोबार शुरू करना चाहती है और उसे बहुत कठिन कानूनी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

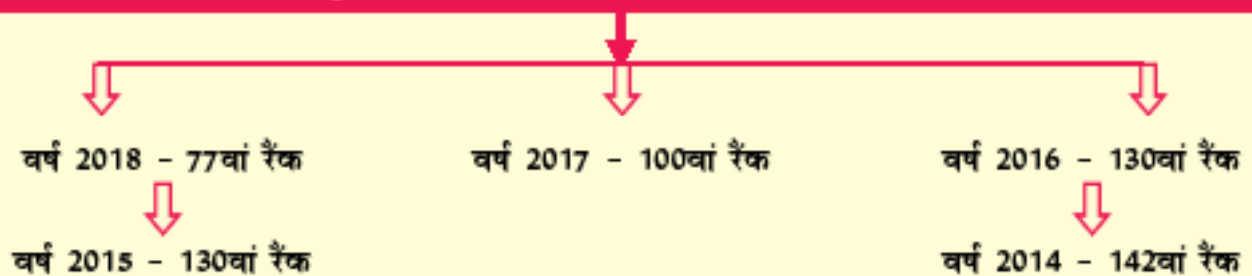
- ❖ किसी देश में कारोबार शुरू करने और उसे चलाने के लिए माहौल कितना अनुकूल है।

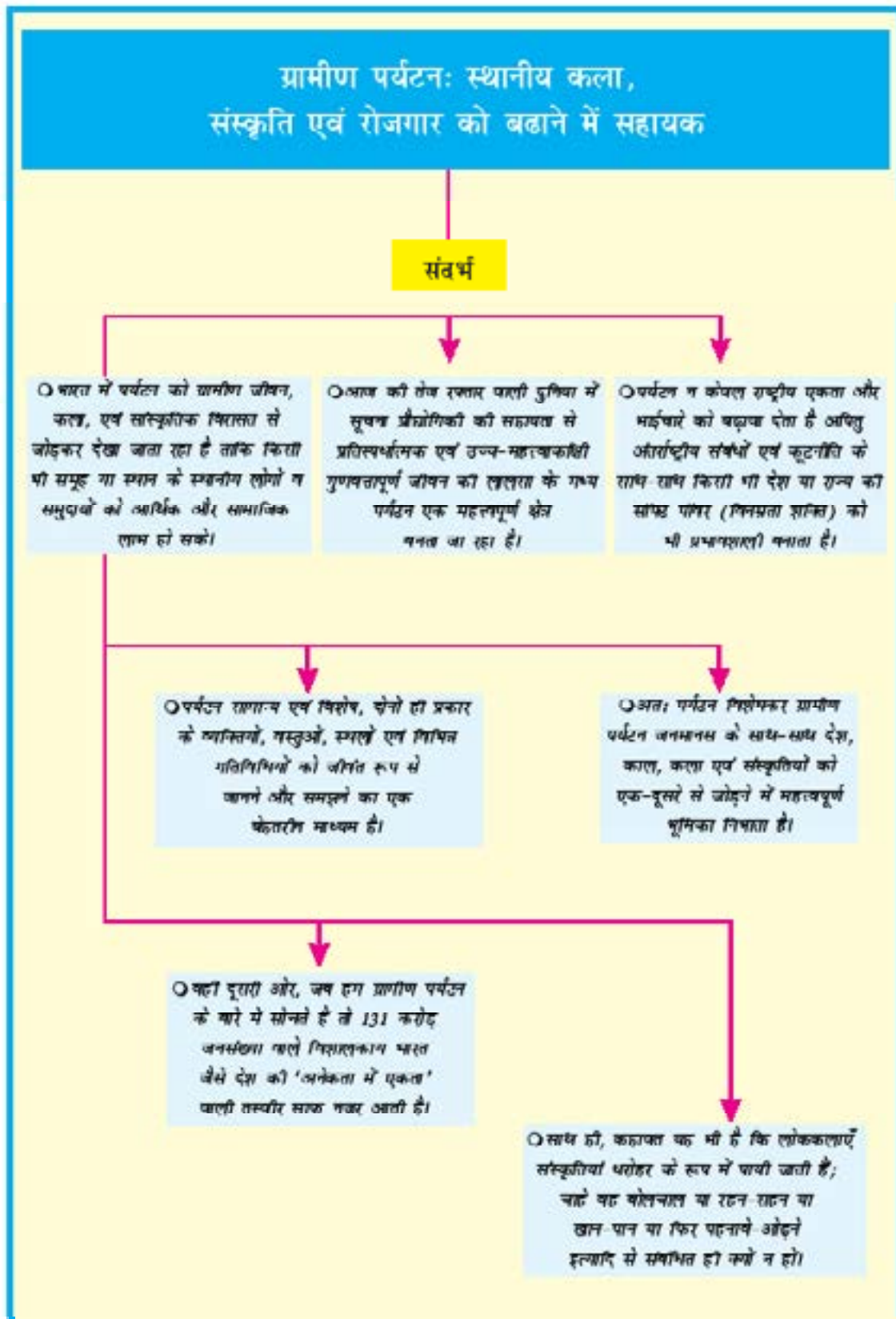
- ❖ भारत में बिजनेस शुरू करना आसान नहीं है और ऐसे माहौल में भारत की रैंकिंग बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती है।

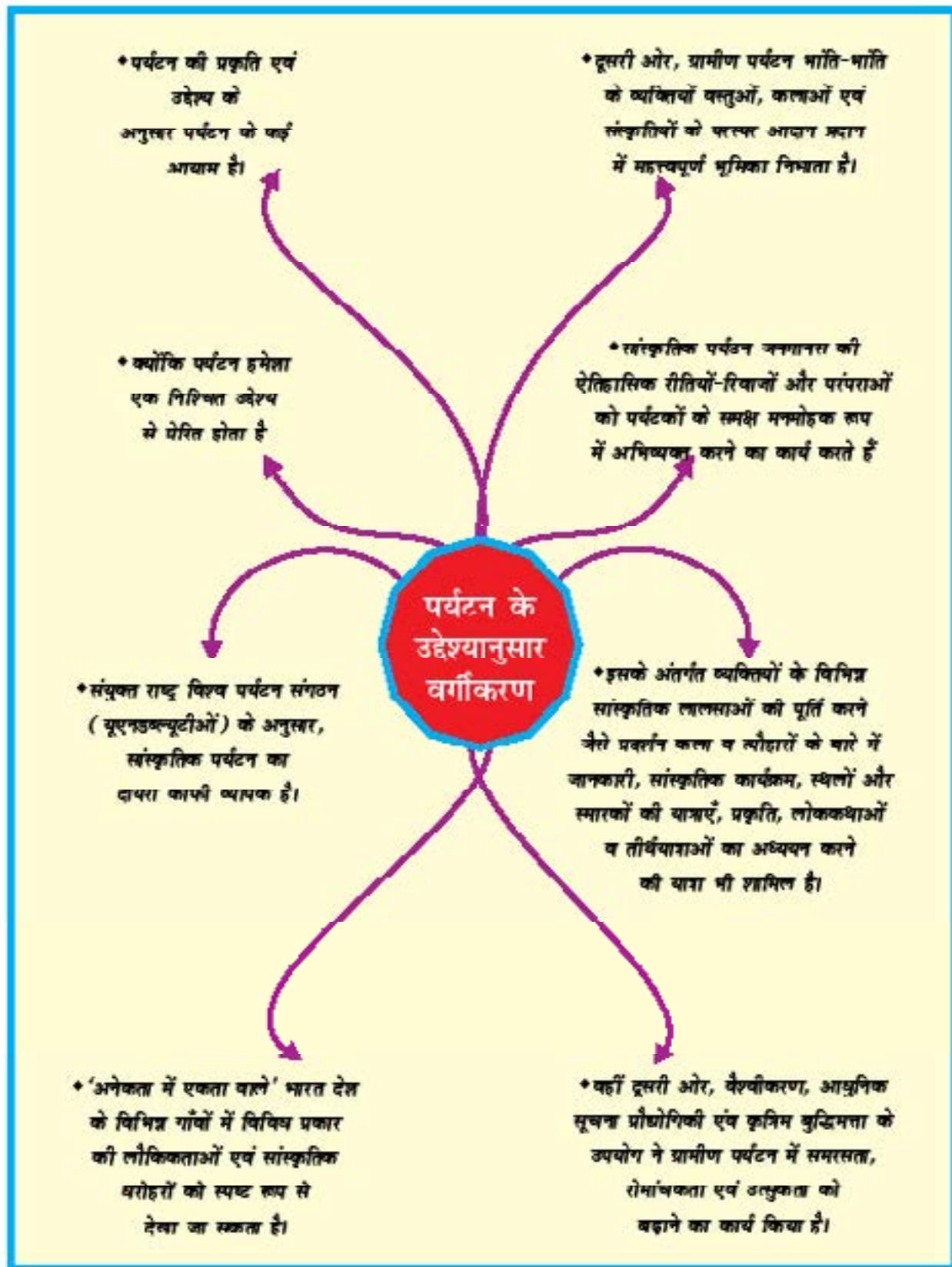
निम्नांकित छः मामलों में अच्छे प्रदर्शन से भारत की रैंकिंग सुधरी



पिछले कुछ वर्षों में भारत की रैंकिंग निम्नवत रही है...







भारत में पर्यटन प्रोत्साहन एवं प्रबंधन

आजादी के बाद से ही भारत में पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न नीतिगत उपाय किए गए जिसके अंतर्गत समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास पर जोर दिया गया।

इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन हो सके

भारत के विभिन्न राज्यों में विशेषकर ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने एवं उनके समग्र प्रबंधन के द्वारा पर्यटन क्षेत्र को नई दिशा एवं दशा देने हेतु नीतिगत कदम उठाए गए हैं।

पर्यटन धूम्रहित उद्योग होने के कारण स्थानीय रचनात्मक वस्तुओं जैसे विभिन्न हस्तकला के उत्पादों एवं सेवाओं के साथ-साथ लोककला एवं मितव्ययी नवाचार को भी बढ़ावा देता है

पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के अलावा सामाजिक एकीकरण व गरीबी उन्मूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्थानीय खेलकूद एवं गतिविधियां, जो पर्यटकों की शारीरिक एवं मानसिक मनोदशा को झकझोर कर पुनः उन्हें उन स्थलों को अत्यधिक अन्वेषण हेतु प्रेरित करती है।

ग्रामीण पर्यटन: स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत

ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक-स्तर तक पहचान बनाने यानी 'लोकल टू ग्लोबल' प्रक्रिया में अत्यंत सहायक होता है

इसके साथ-साथ ग्रामीण पर्यटन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण, विचारों, अनुभवों, लोकनृत्य एवं कलाओं के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन बनते हैं

ग्रामीण पर्यटन एवं आजीविका

• पर्यटन, मुख्य रूप से न केवल सेवा क्षेत्र में आजीविका के अवसर का सृजन करने में सहायक होता है अपितु यह कृषि एवं संबन्धित क्षेत्र के साथ-साथ विनिर्माण क्षेत्र के विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

• पर्यटन का हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ गहरा संबंध है।
• पर्यटन के क्षेत्र में राजस्व-पूँजी का अनुपात अत्यधिक होता है

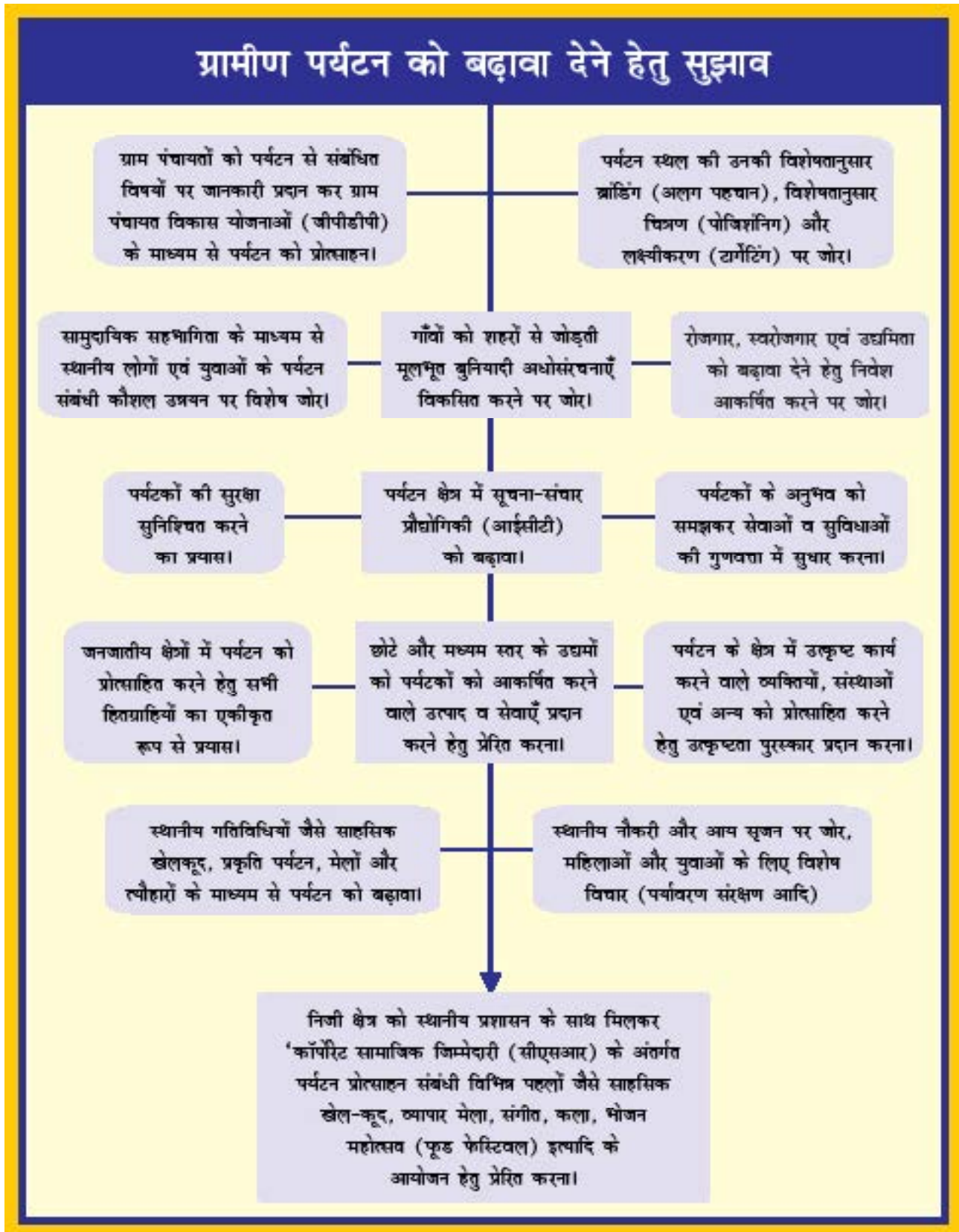
• पर्यटन क्षेत्र में प्रत्येक दस लाख रुपये के निवेश से प्रत्यक्ष रूप से 47 नौकरियों व परोक्ष रूप से 11 नौकरियों का सृजन होता है

• पर्यटन पूँजी-प्रधान तो है ही परंतु अधिक श्रम-प्रधान क्षेत्र होने के कारण, भारत जैसे विकासशील देशों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न करने की क्षमता भी रखता है

• यह रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमिता को बढ़ावा देकर लगभग सभी क्षेत्रों में जैसे परिवहन, होटल एवं आतिथ्य, खुदरा व्यापार, कृषि, विपरीय सेवाओं एवं अन्य सेवाओं के माध्यम से आजीविका के नए अवसर का सृजन करने में सहायक होता है

• पर्यटन किसी भी देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में एक इंजन की भूमिका निभाने वाले स्रोत के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमिता और विदेशी मुद्रा से आय होती है

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सुझाव

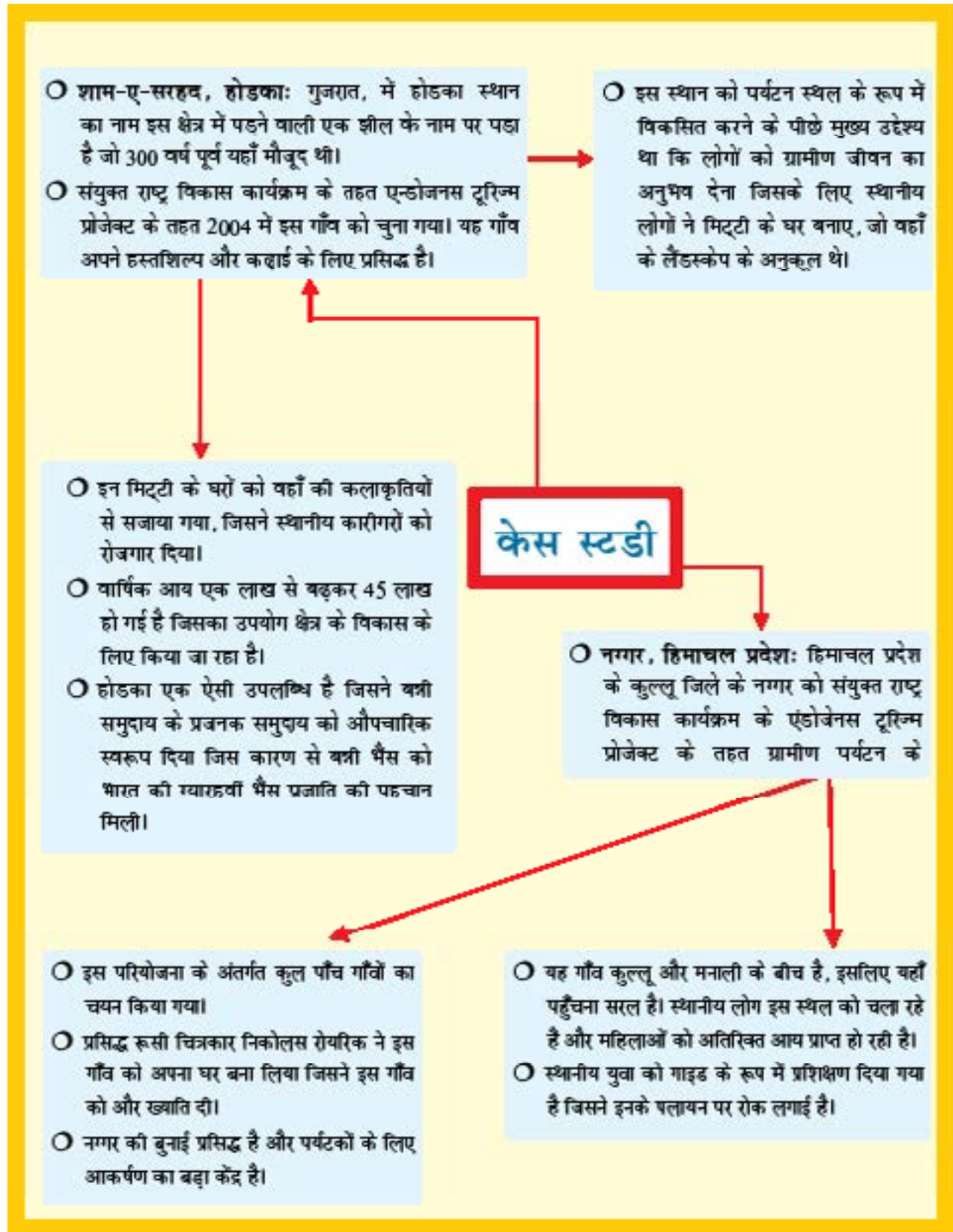


ग्रामीण पर्यटन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- ◆ भारत में 2011 की जगणना के अनुसार, वह क्षेत्र ग्रामीण है जहाँ की जनसंख्या 10,000 से कम है।
- ◆ इस सर्वे के अनुसार भारत में 7 लाख गाँव हैं जहाँ 74 प्रतिशत आबादी रहती है।
- ◆ साथ ही, जनसंख्या का 62 प्रतिशत कृषि पर आधारित है।
- ◆ यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जो पीढ़ियों से शहर में रह रहे हैं और जड़ों से जुड़ना चाहते हैं।
- ◆ 'ग्रामीण पर्यटन' वह पर्यटन है जो ग्रामीण जीवनशैली, यहाँ की संस्कृति, परंपरा, लोक साहित्य, हस्तशिल्प और पिरासत को दर्शाता है।
- ◆ इसके अंतर्गत कृषि पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन, एडवेंचर स्पोर्ट्स और सांस्कृतिक पर्यटन शामिल हैं।
- ◆ इसका मुख्य उद्देश्य लोगों का ग्रामीण जीवन से परिचय कराना और विभिन्न आयाम बताना है।
- ◆ कम प्रदूषण, कम आबादी, प्राकृतिक वस्तुएँ, कम तकनीकी आवि कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो लोगों को ग्रामीण पर्यटन की ओर आकर्षित करती हैं।

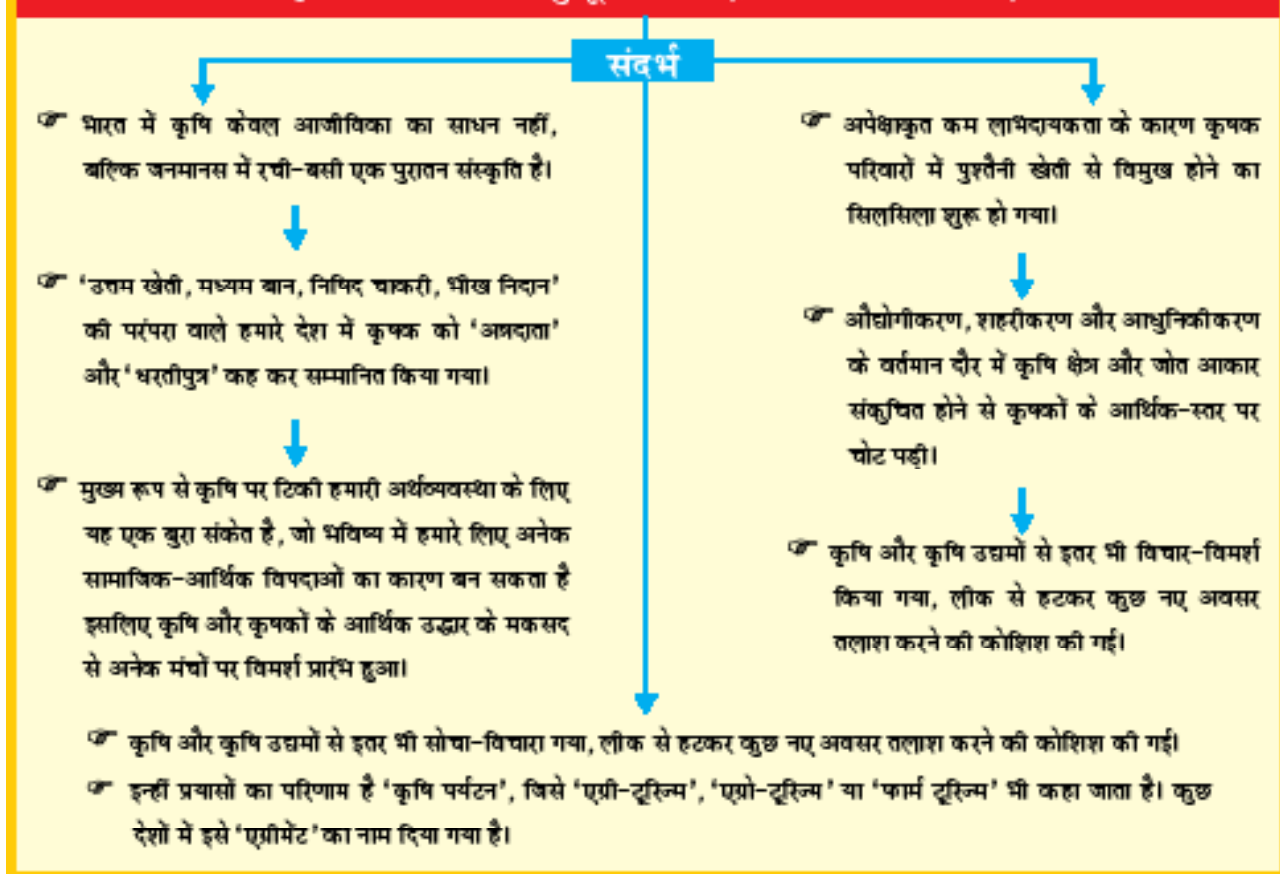
- * 2017 में पर्यटन का सकल घरेलू उत्पाद में 3.7% प्रत्यक्ष योगदान था जो 2018 में 7.6% की दर से बढ़ा और वर्ष 2020 तक यह संभावना है कि यह सकल घरेलू उत्पाद का 3.9% हो जाएगा।
- * यदि पूर्ण योगदान की बात की जाए तो यह 2017 में 9.4 प्रतिशत था जो 2018 में 7.5 प्रतिशत की दर से बढ़ा (अनुमानित) और 2028 में सकल घरेलू उत्पाद का 6.9 प्रतिशत होने के संभावना है।
- * रोजगार के दृष्टिकोण से देखा जाए तो 5 प्रतिशत रोजगार केवल पर्यटन से आया है जो 2018 में 2.8% की दर से बढ़ा है और 2028 तक यह 2.1% की दर से बढ़ेगा।
- * इस क्षेत्र की क्षमता का पता इस बात से चलता है कि 2017 में 1.08 करोड़ विदेशी यात्री भारत आए जो 2016 की तुलना में 15.6 प्रतिशत अधिक हैं।
- * 2016 में घरेलू पर्यटकों की संख्या 161.36 करोड़ थी।
- * 2017 में कुल मुद्रा आय 1,80,379 करोड़ थी जो 2016 की तुलना में 17 प्रतिशत अधिक थी।







कृषि पर्यटन:- अनुकूल दशाएं, अपार संभावनाएँ



गाँव-गाँव पर्यटन

● भारत में कृषि आधी से अधिक जनसंख्या के लिए रोजगार और आजीविका का साधन है, परंतु सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका योगदान लगभग 17-18 प्रतिशत आंका गया है।

● कृषि की महत्ता इस तथ्य से भी आंकी जा सकती है कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के लगभग 43 प्रतिशत क्षेत्र पर बुआई कर खेती की जाती है।

● सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देश में किसानों की संख्या लगभग 11.9 करोड़ है, जबकि लगभग 14.4 करोड़ कृषि श्रमिक इस कार्य में सीधे जुड़े हैं।

● भारत में विश्व की लगभग सभी प्रकार की जलवायु और मिट्टी पाई जाती है, जिससे यहाँ अनूठी और अतुलनीय जैव-विविधता मौजूद है।

● भारत यह प्राकृतिक वरदान भारतीय कृषि को अपार संभावनाओं वाला क्षेत्र बनाता है।

● दूसरी ओर, पर्यटन हमारे देश का उभरता हुआ व्यवसाय है, जिसने सन् 2018 में देश के जीडीपी में 9.2% और रोजगार में 8.1 प्रतिशत का योगदान किया।

● पर्यटन क्षेत्र में 6.9% की वार्षिक वृद्धि दर देखी जा रही है।

● सन् 2016 में देश में कुल 88.9 लाख विदेशी पर्यटक आए थे, जिनकी संख्या सन् 2017 में बढ़कर लगभग एक करोड़ हो गई, जो 15.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

● पर्यटन की दृष्टि से विश्व के 136 देशों में भारत का 40 वां स्थान है, परंतु पर्यटन की प्रतिस्पर्धी कीमतों के नजरिए से 10 वां स्थान है।

● इस विवेचन से स्पष्ट है कि भारत में कृषि और पर्यटन, दोनों ही क्षेत्रों में विकास तथा विस्तार की संभावनाएँ मौजूद हैं, जिनका लाभ 'कृषि पर्यटन' के उभरते उद्यम को मिल सकता है।

● भारतीय पर्यटन उद्योग में कृषि पर्यटन एक नए अवसर के रूप में सामने आया है, जिसका मुख्य कारण सामाजिक दशाओं में हो रहा बदलाव है।

● एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 35 प्रतिशत शहर निवासियों का गाँव में अब कोई संबंधी नहीं रह गया है और 43 प्रतिशत कभी गाँव नहीं गए हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा है।

● बड़े और आधुनिक स्कूल उन्हें कितनी ज्ञान तो दे रहे हैं, परंतु वे प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि उनकी थाली में आने वाली रोटी किस तरह खेत से यात्रा शुरू करके उनकी रसोई तक पहुँचती है, गाय-धैस से दूध कैसे निकलता है।

● खेत-खलिहानों, ताल-तलैयाँ और पशु-पक्षियों से उनका संबंध टूट गया है या कमजोर पड़ गया है।

● इस कारण शहर के निवासी अब अपना कुछ समय गाँव में बिताना चाहते हैं, भले ही वह पर्यटक के रूप में ही क्यों न आएँ।

● लगभग इन्हीं कारणों से वर्तमान समय में विदेशी पर्यटक भी हमारे गाँवों में आकर अपनी छुट्टियाँ बिताना चाहते हैं।

नया स्वरूप, नया आयाम

- ✦ कृषि पर्यटन वास्तव में पर्यटन का नया स्वरूप है, एक ऐसा स्वरूप, जिसमें देश की माटी की महक है और यह वह सब कुछ उपलब्ध कराता है, जिसकी एक पर्यटक उम्मीद रखता है; जैसे वह आराम से और सुकून से रह सके, वहीं उसे कुछ नया और रोमांचक देखने को मिले, कुछ ऐसा हो जो वो कर सके और कुछ खरीदने का अवसर भी हो।
- ✦ 'फार्म स्टे' सुविधाजनक, आरामदायक और अपेक्षाकृत कम खर्चीले भी होते हैं।
- ✦ ग्रामीण परिवेश अपने प्राकृतिक स्वरूप में, अपनी पारिस्थितिकी के अनुसार, बहुत कुछ नया और अनदेखा उपलब्ध कराते हैं।
- ✦ जैसे पर्यटक गेहूँ, धान, मक्का आदि फसलों के खेत और फलों के बाग-बगीचे देख सकते हैं, वहीं घूम सकते हैं और किसानों के साथ बातचीत करके यह जान भी सकते हैं कि इन फसलों को कैसे उगाया जाता है।
- ✦ पहाड़ी गाँवों में नदियाँ, झरने और ट्रेकिंग भी पर्यटक को आनंदित करते हैं। कृषि पर्यटन में पर्यटकों को बहुत कुछ करके रोमांचित होने का अवसर भी मिलता है, जैसे आप ट्रेक्टर या कोई अन्य कृषि यंत्र/उपकरण अपने हाथों से चला सकते हैं, बैलगाड़ी का सफर कर सकते हैं, नौकायन कर सकते हैं।
- ✦ गाँव के परंपरागत व्यंजन बनाना सीख सकते हैं और खुद भी बना सकते हैं, और गाँव की परंपरागत दस्तकारी का अनुभव भी कर सकते हैं।
- ✦ ये सभी कार्य मनोरंजन का माध्यम भी बन जाते हैं। आम धारणा के विपरीत गाँवों में कुछ नया खरीदने का अवसर भी रहता है।
- ✦ कृषि पर्यटन का आनंद उठाने वाले अपने साथ ताजे बने अचार, मुरब्बे, पापड़, बड़ी आदि सस्ते दामों पर खरीदकर ले जाते हैं।
- ✦ इसके अलावा, गाँवों के परंपरागत साड़ियाँ, चादरें और हैंडलूम के सामान भी कृषि पर्यटकों को लुभते हैं।
- ✦ गाँवों में मल्टीप्लेक्स और मॉल भले ही ना हों, लेकिन स्थानीय नृत्य, गीत- संगीत, कठपुतली का खेल, स्थानीय खेलों का आयोजन, त्यौहार आदि पर्यटकों को खूब भाते हैं।
- ✦ रहा में 'कैम्प फायर' का आयोजन करके पर्यटकों के मनोरंजन की व्यवस्था की जाती है।
- ✦ पर्यटन के इन सभी घटकों को शामिल करके कुछ दिनों का 'टूर पैकेज' बनाया जाता है, जिसे आजकल काफी पसंद किया जा रहा है।
- ✦ हाल में कुछ बड़ी 'ट्रैवल्स एंड टूर' कंपनियों ने इसकी शुरुआत कर दी है। कृषि पर्यटन की ऊपर बताई गई गतिविधियों केवल सांकेतिक हैं, इनका विस्तार और व्यापकता कहीं ज्यादा है।
- ✦ अन्य पर्यटनों की तरह 'कृषि पर्यटन' भी ज्ञान को बढ़ाकर दृष्टि को व्यापकता प्रदान करता है।

❑ कृषि पर्यटन को व्यापक और व्यावसायिक आधार देने के लिए आवश्यक है कि इसे सुनियोजित तरीके से प्रारंभ किया जाए।

❑ सबसे पहले यह देखना चाहिए कि चुने गए स्थान या फार्म की देश के या कम से कम राज्य के विभिन्न भागों से अच्छी कनक्टिविटी हो।

❑ वह स्थान रेल या सड़क मार्ग से जुड़ा हो, यदि लगभग 100 किलोमीटर के दायरे में हवाई अड्डा हो तो अधिक बेहतर होगा।

❑ 'फार्म स्टे' के आसपास होटल-रेस्तराँ नहीं होते, इसलिए सुबह के नाश्ते से लेकर रात्रि के भोजन तक की व्यवस्था करना आवश्यक और कृषि पर्यटन का अभिन्न अंग है।

कुछ सुझाव

❑ 'मेन्यू' तय करते समय परंपरागत भोजन को प्राथमिकता, दें, परंतु कुछ आधुनिक खान-पान भी शामिल करना चाहिए, क्योंकि परिवारों में बच्चे भी होते हैं, जो आमतौर पर 'फास्ट फूड' पसंद करते हैं।

❑ कृषि पर्यटन में 'ओपन किचन' यानी खुली रसोई की व्यवस्था करना बेहतर है, ताकि पर्यटक साफ-सफाई को देख सकें और चाहे तो पारंपरिक व्यंजन खुद पकाने में अपने हाथ भी आजमा सकें।

❑ आनंद और मनोरंजन के अलावा यह भी आवश्यक है कि पर्यटक अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त हों।